



NEERAJ®

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

B.H.D.L.A.-136

B.A. General - 2nd Semester

**Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers**

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Sanjay Jain, M.A. (Hindi), B.Ed.



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

Question Paper—June-2023 (Solved)	1
Question Paper—December-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved)	1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-2
Sample Question Paper-1 (Solved)	1

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	शब्द संपदा, लोकोक्तियां	1
2.	संवाद शैली, वाक्यगत संरचनाएं और शैलियां, अशुद्धियां एवं शोधन	19
3.	सरकारी पत्राचार तथा टिप्पण और प्रारूपण	33
4.	समाचार लेखन और संपादकीय	54
5.	अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार	71
6.	प्रभावी लेखन के गुण	86
7.	रचना (कंपोजीशन) की तैयारी	102
8.	पुनर्रचना (संक्षेपण, भाव पल्लवन आदि)	114
9.	वर्णनात्मक लेखन	131
10.	आख्यानपरक लेखन	144
11.	तार्किक लेखन	155



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

B.H.D.L.A.-136

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी खण्डों से निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।

खण्ड-क

नोट : निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

प्रश्न 1. शब्द-निर्माण और शब्द-रचना का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'शब्द निर्माण', पृष्ठ-3, 'शब्द रचना'

प्रश्न 2. पत्र लेखन के प्रकारों का वर्णन करते हुए अनौपचारिक पत्र और औपचारिक पत्र का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-3, पृष्ठ-33, 'पत्रों के प्रकार'

प्रश्न 3. समाचार से क्या अभिप्राय है? समाचार प्राप्ति के स्रोत समाचार को कैसे प्रभावित करते हैं?

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-4, पृष्ठ-54, 'समाचार क्या है?', पृष्ठ-55, 'समाचार प्राप्ति के स्रोत'

प्रश्न 4. शिल्प के स्तर पर प्रभावी लेखन की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-6, पृष्ठ-87, 'प्रभावी लेखन : शिल्प के स्तर पर'

खण्ड-ख

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए—

प्रश्न 5. शब्दों के अर्थपक्ष का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'शब्दों का अर्थपक्ष'

प्रश्न 6. वर्णनात्मक लेखन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-9, पृष्ठ-138, प्रश्न 1

प्रश्न 7. अर्धसरकारी पत्र किसे कहते हैं? इस पत्र का एक नमूना प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-3, पृष्ठ-38, 'अर्धसरकारी पत्र', पृष्ठ-43, प्रश्न 7

प्रश्न 8. समाचार की भाषा का वर्णन करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-4, पृष्ठ-55, 'समाचार की भाषा', पृष्ठ-56, 'विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त भाषा'

प्रश्न 9. शब्द की समतुल्यता का सिद्धांत एवं अनुवाद की प्रक्रिया संप्रेषण से किस प्रकार से जुड़े हुए हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-5, पृष्ठ-71, 'अनुवाद की प्रक्रियाएँ : अर्थग्रहण', पृष्ठ-72, 'अनुवाद की प्रक्रिया (2) : संप्रेषण'

प्रश्न 10. प्रभावी लेखन के लक्ष्य का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-6, पृष्ठ-88, 'प्रभावी लेखन : लक्ष्य'

खण्ड-ग

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए—

(क) विषय का सीमा-निर्धारण

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-7, पृष्ठ-103, 'विषय का सीमा-निर्धारण'

(ख) सार लेखन

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-8, पृष्ठ-114, 'सार लेखन'

(ग) भाव पल्लवन

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-8, पृष्ठ-115, 'भाव पल्लवन'

(घ) स्थिति या दशा का वर्णन

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-9, पृष्ठ-132, 'स्थिति या दशा का वर्णन'

(ङ) सरलता

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-10, पृष्ठ-144, 'सरलता'

(च) पुनर्कथन

उत्तर—संदर्भ—देखें—अध्याय-11, पृष्ठ-156, 'पुनर्कथन'



QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

B.H.D.L.A.-136

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से उत्तर देना अनिवार्य है।

भाग-क

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. शब्दों के महत्त्व को बताते हुए भाषा के 'सामाजिक स्तर भेद' को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'शब्दों का महत्त्व', 'भाषा के सामाजिक स्तर भेद'

प्रश्न 2. वाक्य तथा वार्तालाप की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-19, 'वाक्य तथा वार्तालाप की विशेषताएं'

प्रश्न 3. समाचार लेखन और संपादन की प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-55, 'समाचार लेखन और संपादन', 'समाचार लेखन का प्रारंभ', पृष्ठ-64, प्रश्न 5, पृष्ठ-65, प्रश्न 6

प्रश्न 4. आख्यानपरक लेखन का विस्तृत परिचय दीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-144, 'आख्यानपरक लेखन'

भाग-ख

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. शब्दों के विभिन्न स्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'शब्दों के विभिन्न स्रोत'

प्रश्न 6. वार्तालाप से क्या अभिप्राय है? वार्तालाप चर्चा का विस्तृत विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-22, 'वार्तालाप (मूल पाठ)', 'वार्तालाप पर चर्चा'

प्रश्न 7. संपादकीय लेखन से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-57, 'संपादकीय लेखन'

प्रश्न 8. अनुवाद की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-71, 'अनुवाद की प्रक्रिया (1) : अर्थग्रहण', पृष्ठ-72, 'अनुवाद की प्रक्रिया (2) : संप्रेषण'

प्रश्न 9. तार्किक लेखन की प्रक्रिया को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-157, प्रश्न 2

प्रश्न 10. रचना करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-110, प्रश्न 11

भाग-ग

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) मुहावरा

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-6, 'मुहावरे और लोकोक्तियाँ'

(ख) अनौपचारिक पत्र

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-32, 'अनौपचारिक पत्र'

(ग) भाव पल्लवन

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-120, प्रश्न 4

(घ) प्रभावी लेखन

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-86, 'प्रभावी लेखन'

(ङ) मसौदा लेखन

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-37, 'प्रारूपण'

(च) विराम चिह्न

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-2, पृष्ठ-20, 'विराम चिह्न'



Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

शब्द संपदा, लोकोक्तियां



परिचय

ध्वनियों का सार्थक समूह 'शब्द कहलाता है अर्थात् शब्द ऐसे स्वतंत्रत वर्णों का समूह होता है, जिसका एक सार्थक अर्थ होता है। ये शब्द वाक्यों के साथ जुड़कर सम्प्रेषण का अर्थ प्रस्तुत करते हैं, जोकि सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, वाणिज्यिक तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रयोक्ता के विचारों को दूसरों तक पहुंचाने का सशक्त माध्य बनकर उभरते हैं। शब्दों को प्रयोग तथा संरचना व निर्मित के आधार के अनेक भागों में विभक्त किया जाता है, जिसका परिचय भी प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत दिया गया है।

मुहावरे-लोकोक्तियाँ भी शब्दों के समान वाक्य के रूप में ही निर्मित तो होते हैं, लेकिन वे सरल वाक्यों के विपरीत लक्ष्यार्थ को प्रस्तुत करते हुए अपना अर्थ बताते हैं। मुहावरों-लोकोक्तियों की भी लेखन व मौखिक अभिव्यक्ति के दौरान अपनी कुछ प्रमुख विशेषताएं भी होती हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

शब्दों का महत्त्व

शब्द भाषा की लघुतम इकाई है। शब्दों से वाक्य बनते हैं। शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई है अर्थात् शब्द वह इकाई है, जिसका प्रयोग भाषा में स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। इन वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए—

हमारे व आपके मन में ढेर सारे विचार, संकल्पना व प्रकाशों के चित्र होते हैं। अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए हम वाक्यों का प्रयोग करते हैं। ये वाक्य कभी बहुत लम्बे-लम्बे होते हैं, किन्तु कभी हमारा काम एक शब्द में ही चल जाता है। यही शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई होते हैं। स्वतंत्र इकाई होने के कारण ही मूल शब्दों को कोष में स्थान दिया जाता है।

हम गिन सकते हैं कि ऊपर पांच वाक्य लिखे हुए हैं। वाक्य गिनने की पहचान तो सीधेतौर पर विराम-चिह्नों से हो जाती है। जितने

विराम-चिह्न आएंगे, उतनी वाक्यों की संख्या होगी। क्या आप बता सकते हैं, इनमें कुल कितने शब्द आए। कम्प्यूटर तत्काल बताता है कि इन लाइनों में 72 शब्दों का प्रयोग किया गया है। कम्प्यूटर शब्दों की पहचान शब्दों के बीच में आए रिक्त स्थान से करता है।

सभी अलग-अलग शब्दों से किसी निश्चित अर्थ का बोध होता है। शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई हैं। प्रत्येक शब्द की कोई न कोई संकल्पना होती है तथा अवसर मिलते ही शब्दों के माध्यम से सामने आ जाती है। संकल्पनाएं एक समान होती हैं, परंतु प्रत्येक भाषा-भाषी अपनी भाषा में शब्दों को मूर्त रूप देता है। अतः किसी एक ही संकल्पना के लिए प्रत्येक भाषा में अलग-अलग शब्द होते हैं।

शब्द की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं—

1. शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई है।
2. शब्द किसी-न-किसी विचार, संकल्पना अथवा प्रकाश का बोध कराता है।
3. प्रत्येक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है।
4. शब्द का अर्थ अपनी अमूर्त अवस्था में शब्द में छिपा रहता है व मूर्त शब्द के रूप में अभिव्यक्त होकर किसी विचार अथवा प्रकाश का बोध कराता है।

भाषा के सामाजिक स्तर भेद

भाषा के सामाजिक स्तर भेद से तात्पर्य है कि भाषा के औपचारिक और अनौपचारिक रूपों को स्थिति, स्थान, संबंध, व्यवसाय आदि के अनुसार प्रयोग किया जाए। जैसे मित्र आपस में मिलने पर 'तू', 'अबे' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, घर में माता-पिता एवं बड़ों के साथ आदरसूचक भाषा का प्रयोग किया जाता है। किसी कार्यालय, विद्यालय, व्यापार, मजदूरी करने वाले लोगों आदि सभी के साथ भाषा का स्तर अलग हो जाता है। अनौपचारिक संबंधों में हम संबोधनों का प्रयोग कम करते हैं तथा भाषा में आत्मीयता होती है। इसके विपरीत औपचारिक संबंधों में भाषा में औपचारिकता एवं सीमित शब्दावली का प्रयोग अधिक रहता

2 / NEERAJ : हिंदी भाषा : लेखन कौशल

है। औपचारिक भाषा में शब्दों के चयन एवं प्रयोग में सावधानी अत्यंत आवश्यक है।

सामाजिक स्तर पर हम भाषा में प्रयुक्त शब्दों और विशिष्ट रूपों से भाषा में भेद कर सकते हैं। साक्षर और निरक्षर की भाषा, शिक्षक और छात्र की भाषा, मित्रों की भाषा, व्यवसायियों की भाषा, डॉक्टर-मरीज आदि की भाषा में अंतर आसानी से पता चल जाता है।

उदात्त कथन—उदात्त कथन का अर्थ है कि दुखद स्थितियों में शिष्ट, उदात्त कथनों द्वारा स्थिति को व्यक्त किया जाता है। उदात्त कथन के अंतर्गत सांकेतिक एवं प्रतीकात्मक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है; जैसे—किसी की मृत्यु को व्यक्त करने के लिए 'मौत' की जगह निधन', 'देहांत', 'स्वर्गवास' आदि शब्दों का प्रयोग करना। किसी स्त्री के पति की मृत्यु का समाचार देने के लिए 'सुहाग उजड़ना', 'चूड़ियाँ टूटना', 'सिंदूर पुंछना' जैसे मुहावरों का प्रयोग करना। उदात्त कथन अमंगलकारी सूचना देते समय झिझक को कम करने तथा अमंगल का भाव कम करने के लिए बोले जाते हैं।

परिस्थितियों के अनुसार उदात्त कथन भी बदल जाते हैं। साधारणतः स्त्री के हाथ की चूड़ी के चटक जाने पर 'चूड़ी टूटना' की जगह 'चूड़ी मौल जाना' कहा जाता है। उदात्त कथन अभद्रता से बचने के लिए भी प्रयोग में लाए जाते हैं; जैसे—बच्चे ने बिस्तर गीला कर दिया, बाथरूम कहाँ है? आदि।

शब्दों के विभिन्न स्रोत (शब्द-भंडार)

उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद—उत्पत्ति के आधार पर शब्द के निम्नलिखित चार भेद हैं—

1. तत्सम—संस्कृत भाषा के शब्द तत्सम कहलाते हैं; जैसे—अग्नि, क्षेत्र, वायु, ऊपर, रात्रि, सूर्य आदि।
2. तद्भव—जो शब्द रूप बदलने के बाद संस्कृत से हिन्दी में आए हैं, वे तद्भव कहलाते हैं; जैसे—आग (अग्नि), खेत (क्षेत्र), रात (रात्रि), सूरज (सूर्य) आदि।
3. देशज—जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, वे देशज कहलाते हैं; जैसे—पगड़ी, गाड़ी, थैला, पेट, खटखटाना आदि।
4. विदेशज—विदेशी जातियों के संपर्क से उनकी भाषा के बहुत से शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी अथवा विदेशज कहलाते हैं; जैसे—स्कूल, अनार, आम, कैची, अचार, पुलिस, टेलीफोन, रिक्शा आदि। ऐसे कुछ विदेशी शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है—

- अंग्रेजी** — कॉलेज, पेंसिल, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर, लैटरबक्स, पैन, टिकट, मशीन, सिगरेट, साइकिल, बोटल, फोटो, डॉक्टर, स्कूल आदि।
- फारसी** — अनार, चश्मा, जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, बीमार, बर्फ, रूमाल, आदमी, चुगलखोर, गंदगी, चापलूसी आदि।

- अरबी** — औलाद, अमीर, कत्ल, कलम, कानून, खत, फकीर, रिश्त, औरत, कैदी, मालिक, गरीब आदि।
- तुर्की** — कैची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दारोगा, बहादुर आदि।
- पुर्तगाली**— अचार, आलपीन, कारतूस, गमला, चाबी, तिजोरी, तौलिया, फीता, साबुन, तंबाकू, कॉफी, कमीज आदि।
- फ्रांसीसी**— पुलिस, कार्टून, इंजीनियर, कपर्दू, बिगुल आदि।
- चीनी** — तूफान, लीची, चाय, पटाखा आदि।
- यूनानी** — टेलीफोन, टेलीग्राफ, ऐटम, डेल्टा आदि।
- जापानी** — रिक्शा आदि।
- डच** — बम आदि।

शब्दों का अर्थ पक्ष

अर्थ की दृष्टि से शब्द के दो भेद हैं—(i) सार्थक शब्द (ii) निरर्थक शब्द।

(i) सार्थक शब्द—जिन शब्दों का कुछ-न-कुछ अर्थ हो वे शब्द सार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे—रोटी, पानी, ममता, डंडा आदि।

(ii) निरर्थक शब्द—जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, वे शब्द निरर्थक कहलाते हैं, जैसे—रोटी-वोटी, पानी-वानी, डंडा-वंडा; इनमें वोटी, वानी, वंडा आदि निरर्थक शब्द हैं। निरर्थक शब्दों पर व्याकरण में कोई विचार नहीं किया जाता है।

सहप्रयोग (Collocation)—शब्द एक-दूसरे पर आश्रित होते हैं। अर्थ की दृष्टि से 'हत्या' कहने पर पुलिस, गिरफ्तार, अदालत, सजा आदि शब्द ध्यान में आते हैं। रोगिस्तार से गरमी, ऊँट, नखलिस्तान (Oasis) आदि शब्द जुड़े हुए हैं। शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए सहप्रयोग करने वाले अन्य शब्दों का उपयोग करना पड़ता है। एक शब्द को सीखते समय अन्य समक्षेत्रीय-सहयोगी शब्दों को भी सीखना आवश्यक है।

सहप्रयोग का शैली की दृष्टि से भी महत्त्व है; जैसे—'शमा' और 'परवाना' का एक साथ प्रयोग करना, 'दिया' और 'परवाना' या 'शमा' और 'कीट' का नहीं। सामान्य बोलचाल में 'हाथ का काम' कहेंगे (हस्त की कला नहीं), साहित्यिक या पारिभाषिक अर्थों में 'हस्तकला' (हाथ की कला नहीं), 'हृदयगति' (दिल की गति नहीं) 'कुटीर उद्योग (झोपड़ी उद्योग नहीं), 'विद्युत ऊर्जा' (बिजली ऊर्जा नहीं) आदि प्रयोग में शब्द बदलने की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। ऐसे प्रयोगों में शब्द बदलने पर भाषा में शैलीगत दोष आ जाता है।

शब्द-निर्माण

वाक्य में प्रयुक्त शब्द विभिन्न प्रत्यय लग जाने के बाद जब एक निश्चित रूप ग्रहण करके निश्चित प्रकार्य करने लगते हैं, ऐसे प्रकार्ययुक्त शब्द शब्द-रूप या पद कहलाते हैं। भाषा में शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने के लिए विभिन्न शब्द-रूप बनाए जाते हैं। यह प्रक्रिया शब्द-रूप निर्माण कहलाती है। इस दृष्टि से किसी भी शब्द में प्रत्यय लगाकर अनेक रूप बनाए जा सकते हैं।

शब्द-रूप निर्माण प्रक्रिया से नए शब्दों का निर्माण नहीं होता, वरन ये उसी शब्द के विभिन्न रूप होते हैं और वाक्य में अलग-अलग व्याकरणिक कार्य करते हैं; जैसे-पढ़ना शब्द से बने विभिन्न शब्द-रूप के अलग-अलग प्रकार्य होंगे-

1. जल्दी पढ़।
2. जल्दी पढ़ो।
3. जल्दी पढ़िए।
4. जल्दी पढ़िएगा।

पहले वाक्य का 'पढ़', 'शब्द-रूप' संकेत दे रहा है कि इस वाक्य का कर्ता 'तू' होगा, अगले वाक्य में, 'पढ़ो' रूप का कर्ता 'तुम' व क्रमशः तीसरे व चौथे वाक्य के 'पढ़िए', 'पढ़िएगा' रूप का कर्ता 'आप' होगा। प्रयोग व प्रकार्य की दृष्टि से 'लिख' रूप मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम के साथ ही प्रयोग किया जा सकता है। 'पढ़ो' रूप मध्यम पुरुष बहुवचन के साथ तथा 'पढ़िए', 'पढ़िएगा' रूप बहुवचन सम्मानसूचक सर्वनाम (आप) के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

भाषाओं में एक शब्द से अन्य शब्द बनाने की यह प्रक्रिया 'शब्द निर्माण प्रक्रिया' कहलाती है। शब्द निर्माण प्रक्रिया 'शब्द-साधन' अथवा 'व्युत्पादन' भी कहलाती है। इस प्रक्रिया के कुछ शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं-

1. अप	+	शकुन	=	अपशकुन
अन	+	जान	=	अनजान
परि	+	पूर्ण	=	परिपूर्ण
2. सुंदर	+	ता	=	सुंदरता
सवार	+	ई	=	सवारी
मित्र	+	ता	=	मित्रता
3. मंत्री	+	परिषद्	=	मंत्रीपरिषद्
राज	+	भाषा	=	राजभाषा
स्नान	+	गृह	=	स्नानगृह

शब्द रचना

अपने अभिप्राय को अभिव्यक्त करने के लिए हमें अधिक से अधिक शब्दों की आवश्यकता होती है। अतः नए-नए शब्दों की रचना दो प्रकार से की जा सकती है-उपसर्ग लगाकर तथा प्रत्यय जोड़कर।

1. **उपसर्ग**-ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द से पहले लगकर उस शब्द के अर्थ को बदल देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। हिन्दी भाषा में संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू के शब्दों का प्रयोग होता है।

(क) संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	शब्द
उप (निकट, समान या गौण)	उपकार, उपकरण
सम (अच्छा, संयोग, सहित)	संकल्प, संतोष
अधि (ऊंचे, अधिक या श्रेष्ठ)	अधिकार, अध्यक्ष

निर/निस् (रहित, निषेध या बिना)	निर्मल, निश्चल
अनु (पीछे, बाद में, समान, प्रत्येक)	अनुग्रह, अनुभव
परा (विपरीत)	पराधीन, पराजय
दुर/दुः/दुस (बुरा, कठिन)	दुर्गम, दुस्साहस
सु (शुभ, सहज)	सुगम, सुयोग
अभि (सामने, पास, चारों ओर)	अभियान, अभिनय
प्र (अधिक, आगे)	प्रकृति, प्रगति
अव (बुरा, हीन, नीचे)	अवगत, अवनति
प्रति (हर एक, विरुद्ध)	प्रतिक्षण, प्रतिकूल
अप (अनुचित, बुरा)	अपवाद, अपयश
परि (चारों ओर)	परिपूर्ण, परिक्रमा
आ (तक, समेत, पूर्ण)	आगमन, आमरण
वि (विशेषता, भिन्नता, अभाव)	विकार, विनाश
अति (बहुत अधिक)	अतिशय, अत्याचार
नि (निषेध, निपुणता, अधिकता)	निष्कपट, निबंध
अ (अभाव, निषेध, हीन, विपरीत)	अकाल, अधर्म
अंतः/अन्तर् (भीतर)	अंतर्मन, अंतःकरण
अधः (नीचे)	अधःपतन, अधोलिखित
अन् (अभाव)	अनर्थ, अनुपम
अलम् (बहुत)	अलंकार, अलंकरण
कु (बुरा)	कुकर्म, कुरूप
चिर (बहुत देर)	चिरकाल, चिरायु
तिरस्/तिरः (निषेध)	तिरस्कार, तिरोहित
पुनर् (फिर)	पुनर्जन्म, पुनर्मिलन
पुरस् (सामने)	पुरस्कार
पुरा (पहले)	पुरातन, पुरातत्त्व
प्राक्/प्राग (पहले)	प्राक्कथन, प्रागैतिहासिक
प्रादुर् (प्रकट होना)	प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत
बहिस्/बहिर् (बाहर)	बहिष्कार, बहिर्मुखी
सत् (सच्चा)	सज्जन, सदाचार
सम (समान)	समकोण, समकालीन
सह (साथ)	सहपाठी, सहोदर
स्व (अपना)	स्वजन, स्वतंत्र
स्वयं (अपना)	स्वयंसेवक, स्वयंवर

(ख) हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग	शब्द
भर (भरा हुआ)	भरपूर, भरपेट
स/सु (सहित, अच्छा)	सकल, सहित
अ (अभाव, निषेध)	अज्ञान, अथाह
दु (कम)	दुबला, दुसाध्य
अन (निषेध, अभाव)	अनपढ़, अनजान

4 / NEERAJ : हिंदी भाषा : लेखन कौशल

औ/अव (हीन)	औगुन, अवगुण
क/कु (बुरा)	कपूत, कुसंग
अध (आधा)	अधखिला, अधपका
उन (एक कम)	उनतीस, उनसठ
चौ (चार)	चौमासा, चौराहा
नि (रहित)	निडर, निकम्मा
पर (दूसरी पीढ़ी का)	परदादा, परपोता
बिन (रहित)	बिनब्याहा, बिनजाने

कुछ शब्दों में एक से अधिक उपसर्गों का प्रयोग भी होता है। उदाहरणतया—

- समालोचना - सम् + आ + लोचना
पर्यावरण - परि + आ + वरण
अप्रत्यक्ष - अ + प्रति + अक्ष
अनासक्ति - अन् + आ + सक्ति
दुर्व्यवहार - दुर् + वि + अव + हार

(ग) उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	शब्द
बे (अभाव)	बेईमान, बेकसूर
हर (प्रत्येक)	हररोज, हरदम
सर (मुख्य)	सरताज, सरपंच
गैर (भिन्न)	गैरहाजिर, गैरसरकारी
दर (में)	दरअसल, दरहकीकत
ना (नहीं)	नापसंद, नालायक
बद (बुरा)	बदनाम, बदसूरत
हम (साथ)	हमनाम, हमसफर
कम (थोड़ा, हीन)	कमसिन, कमजोर
ऐन (ठीक, पूरा)	ऐनवक्त, ऐनमौका
खुश (अच्छा)	खुशमिजाज, खुशनसीब
बा (सहित)	बाइज्जत, बावजूद
बिला (बिना)	बिलावजह, बिलानागा
ला (बिना)	लावारिस, लाजवाब

2. प्रत्यय—जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में लगकर उस शब्द के अर्थ में विशेषता ला देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

(क) कर्त्तासूचक प्रत्यय

प्रत्यय	शब्द
आर	सुनार, लुहार
एरा	सपेरा, लुटेरा
हारा	लकड़हारा, सर्वहारा
गर	जादूगर, कारीगर
वाला	रखवाला, सब्जीवाला

अक	—	पाठक, दर्शक
इया	—	रसोइया, बंबइया

(ख) भाववाचक प्रत्यय (संज्ञा या विशेषण से)

प्रत्यय	शब्द	
अंत	—	रटंत, गढ़ंत
आई	—	लिखाई, पढ़ाई
आन	—	मिलान, लगान
आहट	—	घबराहट, गरमाहट
आवट	—	लिखावट, सजावट
इमा	—	महिमा, लालिमा
क	—	घातक, गायक
पन	—	लड़कपन, पागलपन
ता	—	मानवता, सरलता
त्व	—	व्यक्तित्व, पुरुषत्व
ई	—	लंबाई, मिठाई
आव	—	चढ़ाव, बहाव
औती	—	बपौती, कटौती
पा	—	बुढ़ापा, मोटापा

(ग) विशेषणसूचक प्रत्यय

प्रत्यय	शब्द	
ऊ	—	चालू, पेदू
आक, आका	—	चालक, लड़ाका
आलु	—	दयालु, कृपालु
आलू	—	झगड़ालू, लजालू
आ	—	भटका, भूखा
ऐया	—	गवैया, खवैया
इया	—	कलकतिया, घटिया
गर	—	कारीगर, जादूगर
ईय	—	अनुकरणीय, भारतीय
ईला	—	रंगीला, चमकीला
वान	—	रूपवान, गाड़ीवान
आऊ	—	बिकाऊ, टिकाऊ
वाला	—	टोपीवाला, चायवाला
ला	—	पहला, अगला
ऐल	—	गुस्सैल, रखैल
दार	—	मालदार, असरदार
कर	—	भयंकर, प्रलयंकर
कारी	—	आज्ञाकारी, कलाकारी
द	—	सुखद, दुःखद
दायी	—	दुखदायी, सुखदायी
नाक	—	शर्मनाक, खौफनाक
देह	—	तकलीफदेह, आरामदेह